International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 20-06-2020; Accepted: 05-07-2020; Published: 21-07-2020
www.socialsciencejournal.in
Volume 6; Issue 4; 2020; Page No. 51-53

नदी अन्तराबन्धन तथा जल संरक्षण : भागलपुर तथा मुंगेर प्रमण्डल के संदर्भ में भौगोलिक अध्ययन

मनुजेन्द्र कुमार [1], संजय कुमार झा [2]

[1] (शोधार्थी), विश्वविद्यालय भूगोल विभाग, तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत

[2] शोध निदेशक, प्राध्यापक–सह–विभागाध्यक्ष, विश्वविद्यालय भूगोल विभाग, तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत

सारांश

भागलपुर तथा मुंगेर प्रमण्डल सहित संपूर्ण बिहार सूखा, बाढ़, भौम जलस्तर में लगातार गिरावट एवं ग्रीष्मकाल में भीषण जल–संकट जैसे अनेक त्रासदियों से ग्रस्त एवं तवाह है। इन तमाम त्रासदियों से छुटकारा, नियंत्रण तथा मुक्ति पाने की दिशा में समाज सेवियों, नियोजकों, भूवैज्ञानिकों एवं बुद्धिजीवियों के द्वारा लगातार शोध, प्रयास एवं खोज किये जा रहे हैं। इसी दिशा में नदी अन्तराबन्धन परियोजना एक साहसिक प्रयास है। वास्तव में नदी अन्तराबन्धन परियोजना एक बड़े पैमाने पर प्रस्तावित सिविल इंजीनियरिंग परियोजना है, जिसका उद्देश्य नदियों को जलाश्यों और नहरों के माध्यम से आपस में जोड़ना है। इसके द्वारा क्षेत्र विशेष में न सिर्फ स्थानीय स्तर पर बाढ़ एवं सुखाड़ से मुक्ति मिलेगी बल्कि जल परिवहन, पर्यटन, मनोरंजन, मत्स्यन, जल–जीवन का संरक्षण एवं भौम जल स्तर को कायम रखने में मदद मिलेगी। साथ ही सरकार को राजस्व की प्राप्ति होगी, स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर बढ़ेगें एवं क्षेत्रीय कृषि उत्पादों को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पहचान मिलेगी। हलांकि इसे क्रियान्वित करने में अनेक व्यवहारिक एवं तकनीकी व्यवधान आने की संभावना है जिन्हें उदारता एवं ईमानदारी पूर्वक धरातल पर उतारने की आवश्यकता है।

मूल शब्द: नदी अन्तराबन्धन, जल संरक्षण, पर्यटन विकास, रोजगार

प्रस्तावना

अत्यंत प्राचीन आर्कियन एवं धारवाड़कालीन छत–विच्छत, विरूपित, पहाड़ी–पठारी एवं नवीन जलोढ़ द्वारा निर्मित भागलपुर एवं मुंगेर प्रमण्डल (बिहार) का धरातल विविधताओं एवं विभिन्नताओं से परिपूर्ण है। इसके धरातल में एक तरफ सदागामिनी

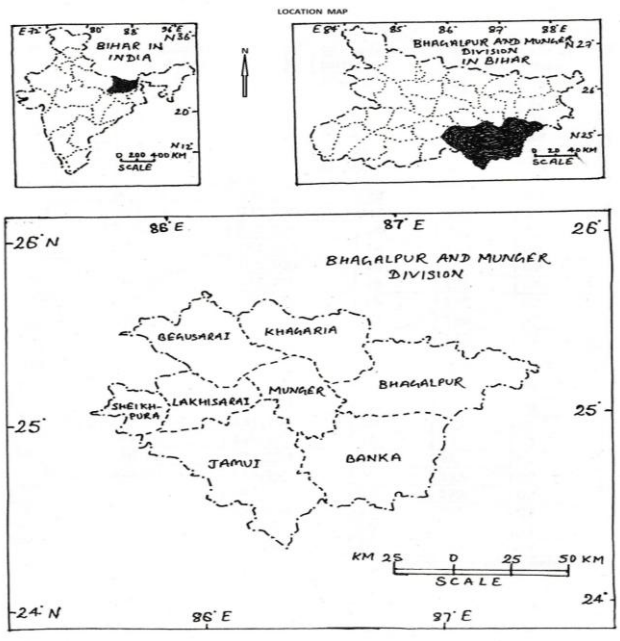

गंगा, कोशी, कमला, बागमती, बूढ़ी गंडक सदृश्य अनेक नदियाँ प्रवाहित होती है जो मार्ग परिवर्तन एवं विसर्पण के लिए विख्यात है, वहीं दूसरी ओर छोटानागपुर पठार से निकलनेवाली अधिकांश नदियाँ जिसमें टाटी, सोमे, कैलाश, हरोहर, क्युली, चानन, बरूवा आदि नदियाँ वर्षाकाल के समय अल्पकालीन बाढ़ की विभीषिका उत्पन्न करती है और वर्ष के अधिकांश महीनों में जलहीन रहा करती है। कुछ छोटी–मोटी परियोजना को छोड़कर कहीं भी इन नदियों के अधिशेष जल को संचयन, अभीष्ट उपयोग एवं नियोजन के क्षेत्र में कोई सराहनीय प्रयास अभी तक नहीं हो पाया है। प्रस्तुत शोधकार्य का अध्ययन क्षेत्र बिहार राज्य के दक्षिणी.पूर्वी भाग में विस्तृत भागलपुर एवं मुंगेर प्रमंडल है। गंगा नदी इसके लगभग उत्तरी–मध्यवर्ती भाग में पश्चिम से पूरब दिशा की ओर बहती है। इस क्षेत्र का अधिकांश भाग गंगा नदी के दक्षिण में विस्तृत है। इस क्षेत्र का अक्षांशीय विस्तार 24ह्17′ उत्तर से 25ह्43′ उत्तरी अक्षांश तथा देशांतरीय विस्तार 85ह्41′ पूरब से 87ह्36′ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। आयताकार स्वरूप वाले इस क्षेत्र की लंबाई पूरब से पश्चिम लगभग 200 किमी0 एवं चौड़ाई उत्तर से दक्षिण लगभग 145 किमी0 है तथा कुल क्षेत्रफल 15,427 वर्ग किमी0 है। 2011 की जनगणना के अनुसार इस क्षेत्र की कुल आबादी 14,475,380, जनघनत्व 938 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0, लिंगानुपात 896, औसत साक्षरता 51 प्रतिशत , पुरूष साक्षरता 71 प्रतिशत एवं स्त्री साक्षरता 53 प्रतिशत है। इस अध्ययन क्षेत्र में कुल 08 जिले, 84 प्रखंड, 1,215 पंचायत तथा 8,180 गाँव है।

4.अध्ययन का उद्देश्य: इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- अध्ययन क्षेत्र में व्याप्त बाढ़ की विभीषिका तथा सूखे की त्रासदी से निजात पाने हेतु योजना प्रस्तुत करना।
- योजना के माध्यम से क्षेत्र में जल संचय कर सिंचाई, मत्स्यन तथा जल–जीवन संरक्षण हेतु प्रस्ताव देना।
- सस्ती व सुगम जल मार्ग के प्रोत्साहन पर बल देना।
- योजना के माध्यम से क्षेत्र में पर्यटक स्थलों को चिन्हित कर पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने का प्रस्ताव देना।

- क्षेत्र में कम लागत में रोजगार के अवसर में वृद्धि करने की योजना प्रस्तुत करना।

5.भागलपुर तथा मुंगेर प्रमण्डल में योजना का प्रारूप

भागलपुर तथा मुंगेर प्रमण्डल हिमालय तथा छोटानागपुर उपत्यका से निकलने वाली दर्जनों बरसाती एवं सतत वाहिनी नदियों के प्रवाह क्षेत्र के अंतर्गत आता है। दोनों ओर से आनेवाली समस्त नदियों को आत्मसात करते हुए लगभग 200 किलोमीटर की यात्रा पश्चिम से पूर्व दिशा की ओर करती है। इन नदियों को अगर आपस में नहरों के माध्यम से जोड़ दी जाय तो इस क्षेत्र में बाढ़ की त्रासदी से बहुत हद तक मुक्ति पाया जा सकता है। साथ ही साथ अंतरवर्ती जलमार्ग, पर्यटन, मत्स्यन तथा सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो सकती है। साथ ही पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा। गंगा नदी के दक्षिणी हिस्से के अधिकांश भाग सूखे से प्रभावित होते हैं जबकि निचला हिस्सा बाढ़ से आक्रांत रहता है। इन समस्त नदियों को नहरों एवं जलाशयों के माध्यम से जोड़ा जा सकता है। हालांकि चांदन, वरूवा तथा क्यूल नदी के उपरी हिस्से में कुछ योजनाएँ बनाई गई है, जिसका उचित रखरखाव न होने के कारण आंशिक लाभ ही मिल पाता है। साथ ही साथ इस क्षेत्र में बहनेवाली मुख्य नदियों में चीर, चानन, वरूवा, क्यूल, कैलाश, सोमे, टाटी आदि के उपरी एवं मध्यवर्ती भाग में बैरेज/छिलका एवं जलाशयों की रचना की जा सकती है जबकि चंपा, गेरूवा, हरोहर एवं क्यूल नदी में सिल्ट को निकालकर उसकी

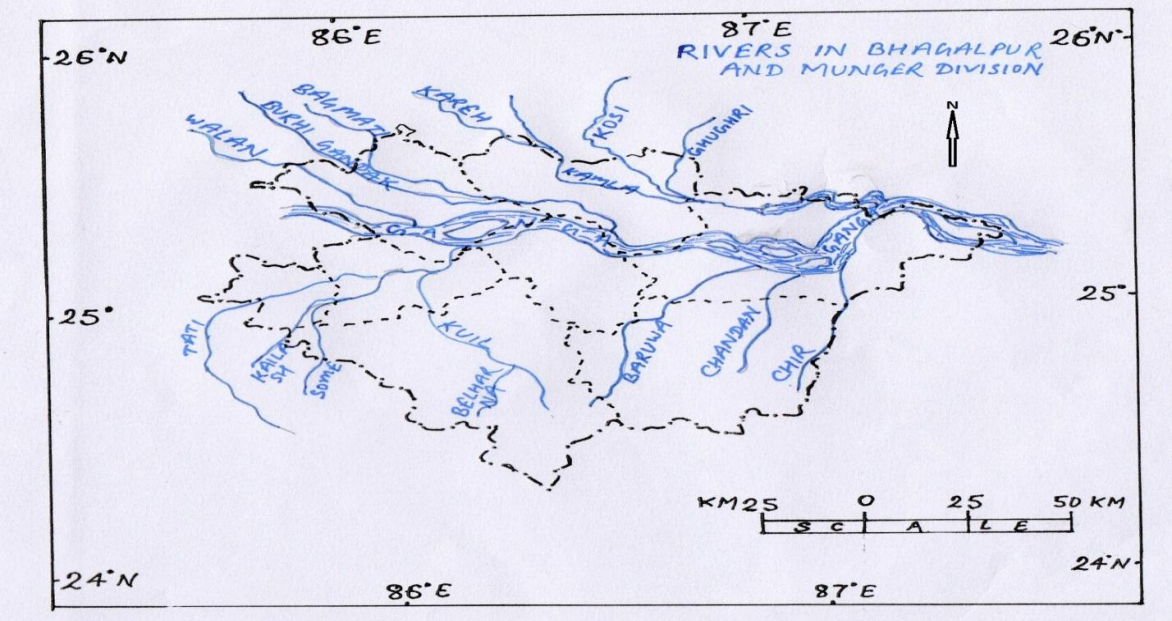

गहराई बढ़ा कर टाल/चौर क्षेत्र में व्याप्त बाढ़ की त्रासदी को कम किया जा सकता है। साथ ही उस क्षेत्र में नौकायन, मत्स्यन तथा रवी एवं गरमा फसलों को वर्ष भर सिंचाई उपलब्ध कराई जा सकती है। ये भौम जलस्तर को कायम रखने में मददगार साबित होंगे।

नदी अन्तराबन्धन परियोजना का लाभकारी प्रभाव इसके दोनों स्कंध पर अवस्थित नगरों को भी उपलब्ध कराई जा सकती है। प्रायः गंगा नदी निरंतर कुछ वर्षों के अंतराल पर अपना मुख्य प्रवाह क्षेत्र बदलती रहती है, जिसका कुप्रभाव नगरवासियों को झेलना पड़ता है। उदाहरनार्थ–गंगा नदी वर्तमान में भागलपुर को छोड़कर उत्तरी तट के सहारे बह रही है। परिणामतः इस नदी से जुड़े समस्त क्रियाकलाप खासकर पेय जल पंप योजना असफल साबित हो रही है। इन्हें जोड़कर इस समस्या से मुक्ति पायी जा सकती है। भागलपुर शहर खासकर बूढ़ानाथ से लेकर चंपानगर के उत्तरी किनारे बहने वाली जमुनियाँ नदी में भी एक निश्चित उँचाई तक बैरेज का निर्माण कर उसमें आवश्यक जल संग्रहित करने की आवश्यकता है। इससे नगर के भौम–जलस्तर को कायम रखने में बल तो मिलेगा ही, साथ ही नौकायन, मत्स्य सुरक्षा एवं पर्यटन उद्योग को भी बढ़ावा मिलेगा। इस तरह की योजना को अन्य शहरों खासकर मुंगेर, बेगुसराय, सुल्तानगंज, कहलगाँव आदि शहरों में भी लागु कर इसका लाभ लिया जा सकता है।

6.योजना के सकारात्मक प्रभाव

नदी अन्तराबन्धन परियोजना का अनेक सकारात्मक प्रभाव दृष्टिगोचर होते हैं, जिनमें प्रमुख निम्नवत है–

1. बाढ़ जैसी भीषण आपदा पर नियंत्रण।
2. फसलों को नियमित एवं सस्ती सिंचाई की सुविधा।
3. पेय जलापूर्ति में सहायक।
4. भौम जल–स्तर को कायम रखने में सहायक।
5. अंतरवर्ती नौकायन को प्रोत्साहन।
6. मत्स्यन को बढ़ावा।
7. जैव विविधता का संरक्षण।
8. पर्यटन उद्योग को प्रोत्साहन।
9. रोजगार के अवसर में वृद्धि।
10. स्थानीय कृषि उत्पाद एवं लघु उद्योग के उत्पादों के पहचान में वृद्धि।

11.कृषि वानिकी को प्रोत्साहन।

7. योजना के नाकारात्मक प्रभाव

हालांकि नदी अन्तराबन्धन परियोजना एक बहुत ही साहसिक प्रयास है किन्तु इसके अनेक नाकारात्मक पक्ष भी उभरकर सामने आते हैं। इन्हें क्रियान्वित करने में अनेक व्यावहारिक तथा तकनीकी कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा, जिनमें से प्रमुख निम्नवत है–

–यह एक बहुत ही खर्चीली योजना है जिसे क्रियान्वित करने में काफी धन की आवश्यकता होगी जो बिहार जैसे पिछड़े राज्यों के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है।

–नहरों तथा जलाशयों के निर्माण में बहुत बड़े भू–भाग का अधिग्रहण करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।

–नहर मार्ग एवं जलाशयों के चिन्हित क्षेत्रों में बसी बस्तियों को पुनर्वासित करना, व्यवहारिक तौर पर बहुत बड़ी चुनौती है।

–भागलपुर एवं मुंगेर प्रमण्डल में नदियों के तटवर्ती भागों में असामाजिक तत्वों का वर्चस्व रहने के कारण कानून व्यवस्था को कायम रखना एक बहुत बड़ी चुनौती है।

8.निष्कर्ष

नदी अन्तराबन्धन परियोजना के सकारात्मक एवं नाकारात्मक पक्ष का अध्ययनोपरांत यह स्पष्ट है कि इसे धरातल पर उतारना एक कठिन साध्य है। किन्तु यदि इसके उपादेयताओं पर दृष्टिपात किया जाय तो न सिर्फ मानव जीवन वरन् संपूर्ण जैव जगत की श्रृंखला को कायम रखने के लिए इसे क्रियान्वित करना वर्त्तमान समय की मांग है। आवश्यकता इस बात की है कि इस मद में निर्गत समस्त राशियों को धरातल पर ईमानदारीपूर्वक क्रियान्वित किया जाय न कि सरकारी दस्तावेजों की खानापूर्ति तक ही सीमित रहे।

9. संदर्भ सूची

1. आधुनिक बिहार का भौगोलिक स्वरूप : प्रो0 गिरिजा नंदन सिंह।
2. बिहार का भूगोल : विश्वनाथ प्रसाद सिन्हा, मो0 नाजिम, चन्द्रशेखर पाठक एवं प्रिन्स फिरोज अहमद।
3. बिहार सामान्य ज्ञान : अमित निरंजन सिन्हा।
4. बिहार की नदियाँ : श्री हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय'।